प्रादर्श प्रश्न पत्र 2011
विषय – इतिहास
कक्षा – बारहवीं

समय– 3 घंटे | पूर्णांक– 100
Time- 3 Hours | **Maximum Mark – 100**

निर्देश–

i. सभी प्रश्न अनिवार्य है।

ii. प्रश्न पत्र में दिये गये निर्देश सावधानी पूर्वक पढ़कर उत्तर लिखिए।

iii. प्रश्न 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न है जिनके अन्तर्गत रिक्त स्थानों की पूर्ति, सत्य/असत्य, सही जोड़ी बनाना, एक वाक्य में उत्तर तथा सही विकल्प का चयन करना है। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का है। 1x5= 5x5 = 25 अंक

iv. प्रश्न क्रमांक 6 से 21 तक में आन्तरिक विकल्प दिये गये है।

v. प्रश्न क्रमांक 6 से 12 तक प्रत्येक प्रश्न के लिए 4 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 75 शब्दों में लिखना है।

vi. प्रश्न क्रमांक 13 से 19 तक प्रत्येक प्रश्न के लिए 5 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 120 शब्दों में लिखना है।

vii. प्रश्न क्रमांक 20 तथा 21 में प्रत्येक प्रश्न पर 6 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 150 शब्दों में लिखना है।

Instructions –

i. All question are compulsory.

ii. Please the instructions carefully before writing the answer.

iii. Q. No. 1 to 5 are objective type which contain fill up the Blank, True/False, match the column, one sentence answer and choose the correct answers. Each question is allotted 5 marks. 1x1 = 5x5 =25 Marks.

iv. Internal options are given in Q. No. 6 to 21.

v. Q. No. 6 to 12 carry 4 marks each and answer should be given in about 75 words.

vi. Q. No. 13 to 19 carry 5 marks each and answer should be given in about 120 words.

vii. Q. No. 20 and 21 carry 6 marks each and answer should be given in about 150 words

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए।

(अ) कल्हण रचित 'राज तरंगिणी' से किस प्रदेश के इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है?

(i) कलिंग (ii) सौराष्ट्र

(iii) कश्मीर (iv) तेलंगाना

(ब) सिंधु सभ्यता की मुहरों पर निम्नलिखित में से कौन सा पशु अंकित नहीं है?

(i) हाथी (ii) बारहसिंगा

(iii) वृषभ (iv) अश्व

(स) 'दशकुमार चरित' नामक संस्कृत काव्य–ग्रंथ के रचयिता थे :–

(i) वाणभट्ट (ii) दण्डिन

(iii) भारवि (iv) सोमदेव

(द) तैमूर के आक्रमण के समय दिल्ली का सुल्तान था :–

(i) फिरोज तुगलक (ii) मुहम्मद तुगलक

(iii) ग्यासुद्दीन तुगलक (iv) नासिरुद्दीन महमूद

(इ) गांधी जी ने किस गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया था?

(i) प्रथम (ii) द्वितीय

(iii) तृतीय (iv) चतुर्थ

Selected the correct answer :-

(a) Kalhan's Rajtarangini gives information about which state

(i) Kalinga (ii) Saurashtra

(iii) Kashmir (iv) Telangana

(b) Which animal in not chqraved on the coin of Indus Valley Civilisation?

(i) Elephant (ii) Stag

(iii) Ox (iv) Horse

(c) Who wrote the Sanskrit book Dasha-Kumarcharita?

(i) Banabhatta (ii) Dandin

(iii) Bharavi (iv) Somdev

(d) During the invasion of Taimur, Emperor of Delhi was :-

(i) Firoz Tughlag (ii) Mohd. Tughlaq

(iii) Gyasuddin Tughlaq (iv) Nasiruddin Mahmood

(e) Gandhi Participated in which Round Table Conference?

(i) First (ii) second

(iii) Third (iv) Forth

प्रश्न 2. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(i) गुर्जर प्रतिहार वंश का सबसे शक्तिशाली व पराक्रमी .....शासक था।

(ii) दिल्ली के सुल्तान ..... ने तांबे की मुद्रा का प्रचलन किया।

(iii) मोतीलाल नेहरु और सी.आर. दास ने ..... नामक दल का गठन किया।

(iv) 'कर्मवीर' नामक पत्र का संम्पादन ..... ने किया।

(v) सन् 1857 ई. में रानी दुर्गावती के वंशज ..... ने अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष किया।

Fill in the blanks of following :-

(i) Most powerful and brave king of Gurjar Pratihar dynasty was …….

(ii) The Sultan of Delhi sultan who lanched copper coins was.....

(iii) Motilal Nehru and C.R. Das founded …… Party.

(iv) 'Karmveer' paper was published by …….

(v) The successor of Rani Durgawati …….fought against the Britishers in 1857 A.D.

प्रश्न 3. एक वाक्य में उत्तर दीजिए।

1. सिकन्दर के साथ भारत आए दो यूनानी विद्वानों के नाम लिखिए।

2. खजुराहो के मंदिरों का निर्माण किस वंश के शासकों ने कराया था?

3. भारत में सुहरावर्दी सम्प्रदाय का प्रवर्तक कौन था।

4. 'अभिनव भारत' नामक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना किसने की थी।

5. सांची के स्तूप का निर्माण किस शासक ने कराया था।

Write Answer in one word.

1. Writre the name of two Greek scholars who came India with Alexander.
2. Write the name of dynasty, whose kings built the temples of Khajuraho.
3. Who was the founder of Suharavardi sect in India.
4. Who founded Revolutionary Organization named 'Abhinav-Bharat'.
5. Who built the 'Stupa of Sanchi'?

प्रश्न 4. स्तंभ 'अ' के लिए स्तंभ 'ब' से चुनकर सही जोड़ी बनाइये –

	अ	–	ब
(अ)	स्थपति	–	जन का प्रमुख अधिकारी
(ब)	सूत	–	न्यायाधीश
(स)	गोप	–	तौल व माप निरीक्षक
(द)	मुहतसिब	–	अर्थ विभाग का प्रधान
(इ)	आमात्य	–	सारथी
		–	प्रान्तपति
		–	आय–व्यय का लेखा जोखा

Make the correct pair for column 'A' choosing from column 'B'

	A	-	B
(a)	Sthapati	-	Main officer of Jana
(b)	Suta	-	Magistrate
(c)	Gopa	-	Inspector of weight and measurement
(d)	Muhatsib	-	Chief of economic department
(e)	Aamatua	-	Sarthi
		-	State Chief
		-	Budget

प्रश्न 5. निम्नलिखित के सत्य/असत्य लिखिए –

(i) होमोसैपियन्स मानव का अस्तित्व मध्य पाषाण काल में था।

(ii) मामल्लपुरम (महाबलिपुरम) के रथ मंदिर का निर्माण चालुक्य शासकों ने करवाया था।

(iii) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम अध्यक्ष सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी थे।

(iv) भूमरा के शिव मंदिर का निर्माण गुप्त शासकों ने कराया था।

(v) मध्यप्रदेश में झण्डा–सत्याग्रह सर्वप्रथम जबलपुर से प्रारंभ हुआ था।

Write in true / false of the following .

(i) Homosapiens man existed in middle stone age.

(ii) Rath temples of mamallpuram (Mahabalipuram) were built by Chalukya Kings.

(iii) The first President of Indian National Congess was Surendra Nath Benerji.

(iv) Gupta Kings built the Shiva Temple of Bhumara.

(v) In Madhya Pradesh flag satyagrah (Jhanda-satyagrah) was started first from Jabalpur.

प्रश्न 6. सिन्धु सभ्यता के विनाश के कोई चार कारण लिखिए।

State any four reasons for decline of Indus – Civilsation.

अथवा

Or

जैन धर्म के सिद्धांत पर संक्षिप्त में लिखते हुए उनके पंच महाव्रतों के विषय में लिखिए?

Describe the principles of Jain Dharma and mention about the Panch Mahavratas?

प्रश्न 7. अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रसार के लिए क्या–क्या कार्य किये?

Write the efforts made by Ashok for the expansion of Buddhism.

अथवा

Or

मथुरा कला–शैली की प्रमुख विशेषताएं लिखिए?

Write the main characteristics of Mathura Style of Art.

प्रश्न 8. समुद्रगुप्त को 'भारत का नेपोलियन' क्यों कहा जाता है है? समझाइए।

Why is Samudra Gupta called 'Napolean of India'? Explain.

अथवा

Or

धर्म परायण शासक के रूप में हर्ष का मूल्यांकन कीजिए।

Evaluate the Harsha as a religious ruler.

प्रश्न 9. परमार नरेश भोज की उपलब्धियों का उल्लेख कीजिए।

Describe the achivevments of Parmar King Bhoj.

अथवा

Or

चोल–शासकों की स्थानीय स्वशासन की विशेषताएं लिखिए?

Write the characteristics of Chola's local self government.

प्रश्न 10. औरंगजेब के सिक्खों से कैसे संबंध थे?

Explain the relation of Aurangzeb with Sikhs.

अथवा

Or

औरंगजेब के विरुद्ध जाटों के संघर्ष का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

Deceribe briefly about the Jat's struggle against Aurangzeb.

प्रश्न 11. जय सिंह व शिवाजी के मध्य हुई पुरन्दर की संधि की शर्तों का उल्लेख कीजिए।

Mention the conditions of Treaty of Purander signed between Jai Singh and Shivaji.

अथवा

Or

'चौथ' और 'सरदेशमुखी' के विषय में संक्षिप्त में लिखिए?

What do you Know about Chauth and Sardeshmukhi ? Write.

प्रश्न 12. भारत में पुर्तगालियों के पतन के चार कारण लिखिए।

Write any four reasons for decline of the Portuguese in India.

अथवा

Or

भारत में डचों के पतन के चार कारणों का उल्लेख कीजिए?

Write the four reasons for decline of the Dutches in India.

प्रश्न 13. प्राचीन भारतीय–इतिहास की जानकारी के लिए सिक्कों के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

Explain the importance of coins for the information about Ancient Indian History.

अथवा

Or

कृषि एवं पशुपालन से नव पाषाण कालीन मानव जीवन में क्या परिवर्तन हुए? स्पष्ट कीजिए।

What changes were brought about by Agriculture and Cattle rearing in Man's life of Neolithic Age?

प्रश्न 14. इल्तुतमिश भारत में मुस्लिम साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक था। इस कथन की व्याख्या कीजिए।

'Iltutmish was the actual founder of Muslim Empire in India'. Proof this statement.

अथवा

Or

मध्यकाल में हुए भक्ति आंदोलन की प्रमुख विशेषताएं लिखिए।

Describe the main characteristics of Bhakti Movement in Medieval period.

प्रश्न 15. अकबर की धार्मिक नीति के कोई पांच परिणाम लिखिए?

Write any five consequences the religious policy of Akbar.

अथवा

Or

शाहजहां कालीन स्थापत्य कला का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

Give the brief introduction of architecture during the period of Shan Jahan.

प्रश्न 16. शिवाजी के चरित्र एवं उपलब्धियों का मूल्यांकन कीजिए।

Evaluate the character and achievements of Shivaji.

अथवा

Or

मराठा राज्य की स्थापना तथा विस्तार हेतु शिवाजी के प्रयासों का वर्णन कीजिए।

Describe the efforts of Shivaji for establishment and expansion of Maratha Kingdom.

प्रश्न 17. सन् 1773 ईस्वी के रेग्यूलेंटिग एक्ट की प्रमुख धाराएं लिखिए।

Write the main clauses of Regulating Act of 1773 A.D.

अथवा

Or

'महालबाड़ी बंदोबस्त' का संक्षिप्त परिचय देते हुए इसके क्या प्रभाव हुए? लिखिए।

Give the brief introduction of Mahalbari System.

प्रश्न 18. स्वामी विवेकानंद ने राष्ट्रीय जागरण में क्या योगदान दिया? संक्षिप्त में लिखिए।

Mention the contribution of Swami Vivekanand in the National Awakening.

अथवा

Or

सन् 1857 ई. की क्रांति की असफलता के किन्हीं पांच कारणों का वर्णन कीजिए?

Describe any five reasons for the failure of revolution of 1857 A.D.

प्रश्न 19. मध्यप्रदेश में विकसित पाषाण युगीन सभ्यता एवं स्थानों का परिचय कीजिए?

Describe the places of development of civilization in Madhya Pradesh during the Stone Age?

अथवा

Or

मध्यप्रदेश का 1857 की क्रांति में क्या योगदान रहा? स्पष्ट कीजिए।

Mention the contribution of Madhya Pradesh in revolution of 1857 A.D.

प्रश्न 20. बक्सर के युद्ध के कारण व महत्व की व्याख्या कीजिए।

Describe the reasons and importance of battle of Buxar.

अथवा

Or

आधुनिक भारतीय इतिहास जानने के स्त्रोतों का वर्णन कीजिए।

Explain the sources of Modern Indian History.

प्रश्न 21. महात्मा गांधीजी ने किन परिस्थितियों में असहयोग आंदोलन का आव्हान किया? विवेचना कीजिए?

In which circumstances Mahatma Gandhi launched Non – Cooperation Movement? Explain.

अथवा

Or

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में सुभाषचन्द्र बोस और आजाद हिन्द फौज के योगदान का मूल्यांकन कीजिए।

Evaluate the contribution of Subhash Chandra Bose and Azad Hind in Indian National Movement.

– – – – – –

आदर्श उत्तर

विषय – इतिहास
कक्षा – बारहवीं

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर –

उत्तर 1. सही विकल्प

(i) कश्मीर

(ii) अश्व

(iii) दण्डिन

(iv) नासिरुद्दीन महमूद

(v) द्वितीय

(5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1 = 5)

उत्तर 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति :–

(i) मिहिर भोज

(ii) मोहम्मद तुगलक

(iii) स्वराज दल

(iv) श्री माखनलाल चतुर्वेदी

(v) शंकरशाह

(5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1 = 5)

उत्तर 3. एक वाक्य में उत्तर –

(1) सिकंदर के साथ निआर्कस, ओनेसिक्रिटस यूनानी विद्वान भारत आए थे।

(2) खजुराहो के मंदिर चंदेल वंश के राजाओं ने बनवाए थे।

(3) भारत में सुहरावर्दी सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक शेख बहाउद्दीन जकारिया थे।

(4) 'अभिनव भारत' नामक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना विनायक दामोदर सावरकार ने की थी।

(5) सांची स्तूप का निर्माण सम्राट अशोक ने कराया था।

(5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1 = 5)

उत्तर 4. सही जोडियां –

	अ	–	**ब**
(अ)	स्थपति	–	न्यायाधीश
(ब)	सूत	–	सारथी
(स)	गोप	–	जन का प्रमुख अधिकारी
(द)	मुहतसिब	–	तौल व माप निरीक्षक
(इ)	आमात्य	–	अर्थ विभाग का प्रधान

(5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1 = 5)

उत्तर 5. सत्य/असत्य –

(i) सत्य

(ii) असत्य

(iii) असत्य

(iv) सत्य

(v) सत्य

(5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1 = 5)

उत्तर 6. सिंधू सभ्यता के विनाश के चार कारण निम्नलिखित है :–

(1) बाहरी आक्रमण – इतिहासकारों का अनुमान है कि किसी बाहरी आक्रमणकारी द्वारा सिंधु घाटी के शांतिप्रय लोगों को युद्ध में भयंकर नरसंहार

द्वारा नष्ट कर दिया गया होगा। मोहन जो दड़ो के उत्खनन से प्राप्त अस्थि पंजर इसके उदारण है।

(2) प्राकृतिक प्रकोप – कुछ इतिहासकारों की मान्यता है कि भयंकर वर्षा, महामारी अथवा लम्बे समय तक जल का अभाव या अकाल ने इस सभ्यता को नष्ट कर दिया।

(3) भौगोलिक परिवर्तन से :– सिंधु नदी के अचानक मार्ग बदलने, भारी बाढ़ आने अथवा क्षेत्र की जलवायु में आए अचानक परिवर्तन से इस सभ्या का विनाश हो गया।

(4) भूकम्प :– यह भी कहा जाता है कि इस क्षेत्र में भूकंप का प्रकोप हुआ होगा जिससे यह संस्कृति नष्ट हो गई होगी।

4 अंक

उपरोक्तानुसार एवं अन्य कारण लिखने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे–1+1+1+1=4

अथवा

महावीर स्वामी ने जिन सिद्धांतों का प्रचार किया वे जैन धर्म के सिद्धांत कहलाते है। **'आगम ग्रंथ'** जैन मतावलम्बियों के लिये पवित्र है। इस पवित्र ग्रंथ से जैन धर्म के सिद्धांतों की शिक्षा मिलती है।

जैन धर्म के पंच महाव्रत इस प्रकार है :–

(1) अहिंसा – मन वचन, कर्म से किसी के प्रति असंयत व्यवहार हिंसा है। जैन धर्म में किसी के प्रति घातक विचार मन में लाने तक को हिंसा माना जाता है।

(2) सत्य वचन – स्नेह और मोह से दूर होकर मनुष्य को सत्य वचन का पालन करना चाहिए।

(3) आस्तेय – दूसरे की सम्पत्ति की कामना जैन धर्म में वर्जित है। इसे चोरी माना गया है।

(4) अपरिग्रह – जैन धर्म में भिक्षुओं को संग्रह की प्रवृत्ति से दूर रहने का निर्देश दिया गया है। न्यूनतम आवश्यकताओं से अधिक संग्रह पर आसक्ति

बढ़ती है, जे मोक्ष के रास्ते में रुकावट बन जाती है। गृहस्थ जीवन में भी इस नियम का पालन अनिवार्य माना गया है।

(5) ब्रह्मचर्य – महावीर स्वामी ने भिक्षुओं को ब्रह्मचर्य व्रत के पालन हेतु निर्देशित किया है। मन, वचन और कर्म से ईश्वर की आराधना में लगे रहना ही सच्चा ब्रह्मचर्य कहलाता है।

उपरोक्तानुसार जैन सिद्धांत पर 1½ अंक एवं पंच महाव्रत पर 2½ कुल 1½ + 2½ कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 7. अशोक ने बौद्ध–धर्म के प्रसार के लिए निम्नलिखित कार्य किए :–

(1) तीर्थ यात्रा :– अशोक ने बौद्ध धर्म स्वीकार करने के पश्चात् अनेक बौद्ध तीर्थ स्थलों की यात्रा की। उसने बिहार, चैत्य और स्तूपों का निर्माण कराया।

(2) धर्म विजय :– अशोक ने हमेशा के लिए साम्राज्यवादी एवं विस्तारवादी नीति का परित्याग कर दिया। उसने मनुष्य के हृदय पर विजय प्राप्त करने का संकल्प लिया।

(3) शिलालेखों की स्थापना :– सम्राट के आदेश, आज्ञाएं, धर्मोपदेश आदि जन साधारण तथा पहुंचाने के लिए चट्टानों के शिलाखण्डों पाषाण स्तंभों पर अभिलेख खुदवाए।

(4) बौद्ध धर्म सम्मेलन – इस सम्मेलन से बौद्ध धर्म के प्रचार में बड़ी सहायता मिली।

(5) लोक कलयाणकारी कार्य :– विश्राम गृहों, कुओं का निर्माण कर लौकिक सुख एवं नैतिक उत्थन में अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग दिया।

(6) धर्म महामात्यों की नियुक्ति – धर्म प्रचार के लिए समी धर्म महामात्यों की भी नियुक्ति की गई थी।

(7) विदेशों में बौद्ध – धर्म का प्रचार करने के लिए बौद्ध भिक्षुओं एवं पुत्र महेन्द्र और पुत्री संधमित्रा को श्रीलंका भेजा।

4 अंक

उपरोक्तानुसार एवं अन्य कोई 4 बिन्दुओं को समझाने पर पूर्ण अंक प्राप्त होंगे–1+1+1+1=4

अथवा

मथुरा–कला शैली की प्रमुख विशेषताएं :–

कुषाण काल में ही मथुरा कला विकसित हुई। मथुरा कला की अनेक मूर्तियां सारनाथ में उपलब्ध हैं। वास्तव में यह कई कलाओं का मिश्रण है। इसमें भरहुत साँची और गाँधार कला का स्पष्ट प्रभाव देखने को मिलता है। मथुरा कला में निर्मित स्तम्भों पर उत्कीर्ण पक्षियों की मूर्तियां सांची एवं भरहुत कला का आभास दिलाती है। यहां स्त्रियों की मूर्तियां निर्मित हैं। जो विभिन्न मुद्राओं में हैं।

इसी प्रकार जातक कहानियों से संबंधित मूर्तियां मथुरा कला में निर्मित हुई।

(1) मूर्तियां बलुआ पत्थर की हैं।

(2) महात्मा बुद्ध के मुख के चारों ओर प्रभामण्डल है।

(3) महात्मा बुद्ध मुण्डित शीश है।

(4) मूर्तियां विशाल हैं व बुद्ध की मूर्तियां प्रायः खड़ी हुई हैं।

(5) मूर्तियों का एक कंधा ढंका तथा दूसरा खुला हुआ है।

(6) इस शैली के अंतर्गत महात्मा–बुद्ध के जीवन की प्रमुख घटनाएं प्रदर्शित की गई हैं जैसे धर्म चक्र प्रवर्तन महापरि–निर्वाण आदि।

(7) मूर्तियों के वस्त्र प्रायः चिपके हुए हैं। साधारणतः मूर्तियां दो वस्त्र धारण किए हए हैं उर्ध्व वस्त्र और अधोवस्त्र। मथुरा कला में लाल चित्तीदार पत्थर का प्रयोग किया गया है। मथुरा कला कुषाण युग की महत्वपूर्ण देन थी। मथुरा कला में निर्मित कनिष्क की भी मूर्ति मिली है जिसका सिर कटा हुआ है। तक्षण कला की दृष्टि से इस कला का भारतीय कला के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है।

4 अंक

उपरोक्तानुसार एवं अन्य कोई 4 बिन्दुओं को समझाने पर पूर्ण अंक प्राप्त होंगे–1+1+1+1=4

उत्तर 8. समुद्रगुप्त को भारत का नेपोलियन : निम्नलिखित कारणों से कहा जाता है। डॉ. वी.ए. स्मिथ ने ही उसे भारत का नेपोलियन कहा है। स्मिथ के अनुसार जिस प्रकार नेपोलियन ने एक महान विजेता तथा योद्धा के समान अपनी युद्ध कौशलता तथा बाहुबल से समस्त यूरोप को आंतकित कर एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की उसी प्रकार समुद–गुप्त ने भी अपूर्ण रण कुशलता और बाहुबल से भारत में एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी। किन्तु समुद्र गुप्त नेपोलियन से ज्यादा महान था जो निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट है :–

(1) समुद्र–गुप्त को नेपोलियन के समान असफलताओं तथा पराजयों का कभी सामना नहीं करना पड़ा था।

(2) नेपोलियन का साम्राज्य उसके जीवन काल में ही छिन्न–भिन्न हो गया था परंतु समुद्र गुप्त का साम्राज्य तो उसके सम्पूर्ण जीवन काल तक स्थायी व दृढ़ रहा।

(3) नेपोलियन ने जिन प्रदेशों को जीता उनमें वह स्थायी शांति की स्थापना नहीं कर सका, परंतु समुद्र गुप्त ने जिन राज्यों को जीता, वहां उसने (स्थायी शांति की स्थापना की थी।)

(4) समुद्रगुप्त योद्धा तथा सेनानायक होने के साथ–साथ कला प्रेमी उदार धर्मवेत्ता तथा साहित्य प्रेमी भी था। उसके काल में अनेक कलाओं का विकास भी हुआ तथा उसने अनेक साहित्यकारों तथा कवियों को अपने यहां आश्रय दिया।

वह स्वयं भी महान कवि तथा कलाकार था। समुद्र गुप्त संगीत का महान प्रेमी था। मथुरा के संग्रहालय से प्राप्त मोहरों से पता चलता है कि उसे वीणा बजाने का शौक था।

समुद्र गुप्त ने विजित राज्यों को केवल कर देने वाले राज्य नहीं वरन उनसे मित्रता के संबंध भी रखे। अतः समुन्द्र गुप्त सभी गुणों से सम्पन्न था।

4 अंक

उपरोक्तानुसार एवं अन्य 4 बिन्दुओं को लिखने पर 2 अंक एवं नेपोलियन से तुलना के कारण पर 2 अंक कुल 4 अंक प्राप्त हों। 2+2=4

अथवा

धर्म परायण शासक केरूप में हर्ष का मूल्यांकन :–

हर्ष प्रारंभ में ब्राह्मण धर्म में आस्था रखता था परंतु बाद में वह बौद्ध धर्म का अनुयायी हो गया था परंतु उसने अपनी धार्मिक नीति को सदा उदार रखा। अन्य शब्दों में उसने सभी धर्मों के प्रति उदार नीति का पालन किया। वह सभी धार्मिक संस्थाओं को दान देता था।

हर्ष एक धर्म परायण शासक था। वह अशोक की भांति धार्मिक क्षेत्र में अत्यंत सहिष्णु था। वह सभी धर्मों का आदर करता था। हर्ष अपने साम्राज्य में प्रत्येक पांच वर्ष के अंतराल पर महामोक्ष परिषद (धार्मिक सभा) का आयोजन करता था। ह्येनसांग ने प्रयाग में आयोजित हर्षवर्धन की छठी महा मोक्ष परिषद देखी थी। इसमें सभी धर्मों के धर्मोचार्य और अनुयायी सम्मिलित हुए थे। हर्ष की धार्मिक नीति के संबंध में चीनी यात्री ह्येनसांग ने लिखा है–'सम्राट हर्ष ने भारत में मांसाहार बंद करा दिया तथा जीवों को कठोर शारीरिक दंड देने की मनाही कर दी। इसने गंगा घाट पर हजारों स्तूपों का निर्माण करवाया और अपने सम्पूर्ण राज्य में यात्रियों के लिए विश्राम गृह बनवाए। पवित्र बौद्ध स्थानों पर विहारों की स्थापना करवायी। वह निर्यामत रूप से पंचवर्षीय दान–वितरण का आयोजन करता था और धर्म निमित्त अस्त्र शस्त्रों के अतिरिक्त अपना सर्वस्व दान कर देता था। उसने स्तूप विहार तथा मठों का निर्माण करवाया। नालंदा विश्वविद्यालय को भरपूर सहायता देता था। स्पष्ट है कि वह धर्मपरायण शासक था।

उपरोक्तानुसार विस्तार से लिखने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 9. परमार नरेश भोज की उपलब्धियां निम्नलिखित थी :–

राजाभोज परमार वंश का सबसे प्रतापी पराक्रमी एवं कीर्तिमान सम्राट था। उसने परमार वंश का तत्कालीन राजनीति में महत्व बढ़ा दिया था। भोज ने कल्याणी के चालुक्यों के संघर्ष किया। दक्षिण में कोंकण पर विजय प्राप्त की।

गुजरात के शासक कीर्तिराज, विद्याधर चंदेल से संघर्ष किया। हिन्दूशाही शासक आनंदपाल को महमूद गजनवी के विरुद्ध सहायता प्रदान की, उसके पुत्र त्रिलोचन पाल को अपने यहां शरण दी। अन्य राजपूत शासकों के साथ मिलकर झांसी थानेश्वर नगरकोट आदि स्थानों को मुस्लिमों से छीनने में सफलता पाई। उत्तर भारत के मुस्लिम शासकों से रक्षा में उसका योगदान रहा है। राजा भोज ने भोपाल के पास भोजपुर नगर बसाया था तथा धारा नगरी में उसने शैक्षिक विकास के लिए एक विश्वविद्यालय की स्थापना की। उसने विद्या एवं साहित्य की प्रगति हेतु कार्य किए। वह स्वयं महान विद्वान था। समरांगण सूत्रधार उसकी महत्वपूर्ण रचना है। उसने अनेक मंदिर विद्यालय बनवाए। धार और भोजपुर जैसे नगर बसाए गए। अनेक विद्वान उसके दरबार में आश्रय पाते थे। सांस्कृतिक दृष्टि से भोज को महत्व है।

4 अंक

उपरोक्तानुसार विस्तार से लिखने पर 4 अंक पूर्ण प्राप्त होंगे।

अथवा

चोल शासकों की स्थानीय स्वशासन की विशेषताएं :–

स्थानीय स्वशासन चोल शासन की एक प्रमुख विशेषता थी। गांव से लेकर प्रांत तक के लिए प्रतिनिधि संस्थाओं द्वारा स्वशसन की व्यवस्था थी। इन प्रतिनिधि संस्थाओं से शासन में सहयेाग प्राप्त किया जाता था। बलनाडु (कमिश्नरी) की प्रतिनिधि सभा 'नगस्तार' थी और नाडु की प्रतिनिधि सभा नाट्टर कहलाती थी। गांव में ग्राम सभाएं होती थी जो उरार और सभा कहलाती थी। इन ग्राम

सभाओं में जनतांत्रिक प्रणाली प्रचलित थी। प्रत्येक गांव 30 वार्डों में विभाजित होता था, इनमें से प्रतिनिधि चुने जाते थे। चुने जाने वाले व्यक्ति के लिए आवश्यक था कि उसके पास 1.5 एकड़ भूमि हो, वेदों व ब्राह्मण ग्रंथों का ज्ञात होता, अपना मकान हो आयु 35 से 70 वर्ष के मध्य हो, अपराधी न हो। कुल 30 प्रतिनिधि होते थे जो विभिन्न समितियों में गठित होते थे जैसे – न्याय , बगीचा, तालाब, विदेशी यात्री समिति आदि। इन सभाओं को ग्रामों में सुव्यवस्था शिक्षा की व्यवस्था करना होता था। ग्राम सभाओं की बैठक मंदिरों के प्रांगण अथा वृक्षों के नीचे हुआ करती थी अैर उसके निर्णयों के लिखकर रखा जाता है।

उपरोक्तानुसार विस्तार से लिखने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 10. औरंगजेब के सिक्खों से संबंध :–

औरंगजेब धर्मान्ध कट्टर सुन्नी मुसलमान था। सिक्ख भी धार्मिक पक्षपात तथा कट्टरता की नीतियों के कारण मुगल साम्राज्य के घोर विरोधी हो गए थे गुरू तेग बहादुर ने औरंगजेब की धार्मिक अत्याचार पूर्ण नीति का विरोध किया था तो उनकी हत्या करवा दी गई थी। इस हत्या से सिक्ख अत्यधिक उत्तेजित हुए तथा गुरू तेग बहादुर के पुत्र गुरू गोविन्द सिंह ने अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने नवीन 'खालसा पंथ' की नींव डाली।

औरंगजेब ने सिक्खों के दमन करने के लिए कई बार सेनाएं भेजी परंतु मुगल सेना को पराजय का मुख देखना पड़ा।

औरंगजेब ने गुरू गोविंद सिंह के दोनों पुत्रों को बंदी बना लिया। धर्म परिवर्तन के लिए बाध्य किया और जब उन्होंने धर्म–परिवर्तन से इंकार किया तो दोनों पुत्रों को जिंदा दीवार में चुनवा दिया गया। इतना सब होने पर भी गुरू गोविंदसिंह ने आत्मसमर्पण नहीं किया।

सिक्ख विरोधी नीति अंत तक मुगल साम्राज्य के पतन का कारण बनीं। क्योंकि वह एक कट्टर पंथी की भांति शासन करने का प्रयत्न किया। प्रत्येक बात में

उन्होंने मुस्लिम कानून (शरीयत) का अनुसरण करता था। जिससे सिक्खों से औरंगजेब के संबंध ठीक नहीं थे।

4 अंक

उपरोक्तानुसार विस्तार से वर्णन किये जाने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

औरंगजेब के विरुद्ध जाटों के संघर्ष :–

औरंगजेब की धार्मिक असहिष्णुता की नीति के विरुद्ध सबसे सशक्त विद्रोह मथुरा के जाटों क था। जिस समय मथुरा के मंदिरों को तोड़कर मस्जिदें बनाई गईं तो जाटों में विद्रोह की ज्वाला धधकने लगीं सन् 1669 में गोकुल जाट ने मुगल फौजदार अब्दुल नबी को मार डाला क्योंकि वह मूर्तियों को तोड़–फोड़कर हिन्दुओं की कन्याओं का अहपरण करता था। औरंगजेब ने निर्ममतापूर्वक दमन किया। गोकुल जाट पकड़ा गया और उसके शरीर के टुकड़े–टुकड़े कर दिए। उसके परिवार के सदस्यों को पकड़कर जबरदस्ती मुसलमान बना लिया गया। 1686 में सिन्सिनी के राजाराम सोधर के रामचेरा ने मुगलों से खुला युद्ध छेड़ दिया युगीर खां को मार डाला। आगरा तक लूट पाट की। सिंकदर पर आक्रमण किया। औरंगजेब की सेना ने राजाराम को मार डाला। राजाराम के बाद उसके भतीजे चूड़ामन जाट ने जाटों का नेतृत्व किया। उसी ने वर्तमान भरतपुर के राजपरिवार की नींव डाली थी। इस प्रकार औरंगजेब और जाटों के बीच वैमनस्य बढ़ती गई और जाट औरंगजेब के शत्रु बन गए।

उपरोक्तानुसार विस्तार से लिखे जाने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 11. पुरंदर की संधि की शर्ते :–

पुरंदर का संधिपत्र शिवाजी के लिए क्षणिक पराजय थी परंतु किसी प्रकार की अंतिम समाप्ति न थी।

राजा जयसिंह ने 1665 में मराठों पर आक्रमण किया। इस युद्ध मे शिवाजी की पराजय हुई। फलतः जयसिंह और शिवाजी के बीच पुरंदर की संधि हुई। 22 जून 1665 में इस संधि की निम्नलिखित शर्ते थी :–

(1) शिवाजी ने बीजापुर के विरुद्ध मुगलों को सैनिक सहायता देने और उनसे युद्ध न करने का वचन दिया।

(2) रायगढ़ के दुर्ग सहित 12 दुर्गों और 1 लाख हूण की वार्षिक आय के प्रदेश शिवाजी के पास हरने दिया गया।

(3) शिवाजी ने अपने 23 दुर्ग और उसके आसपास का प्रदेश जिसकी आय लगभग साढ़े चार लाख हूण वार्षिक थी, मुगलों को दे दिए।

(4) शिवाजी ने मुगल–सम्राट औरंगजेब की अधीनता स्वीकार कर ली।

(5) अपने पुत्र शम्माजी को 5,000 अश्वारोहियों की सेना सहित मुगलों की सेवा में भेजना स्वीकार कर लिया।

(6) मुगल–सम्राट ने शिवाजी को बीजापुर विजय के बाद कोंकण में चार लाख हूण वार्षिक आय का प्रदेश देना स्वीकार किया।

शिवाजी के विरुद्ध–संघर्ष में पुरंदर के किले को घेर लिया ऐसी दशा में शिवाजी को मजबूर होकर पुरंदर की संधि करनी पड़ी थी। इस संधि के अनुसार शिवाजी को अपने 35 दुर्गों में से 23 दुर्ग मुगलों को देना पड़े थे।

4 अंक

संधि के विषय में लिखने पर 1 अंक एवं उपरोक्तानुसार 6 बिन्दुओं को विस्तार से लिखने पर 3 अंक कुल 4 अंक प्राप्त होंगे। 1+3=4

अथवा

चौथे और सरदेशमुखी :– चौथ तथा सरदेश मुखी मराठों द्वरा लिए जाने वाले एक प्रकार के कर थे जिनसे मराठा राज्य को सर्वाधिक आय प्राप्त हुआ करती थी। मराठा राज्य को सबसे अधिक आय उसके शत्रुओं से होती थी। वर्ष में आठ मास शिवाजी की सेना का व्यय–भार किसी न किसी शत्रु क्षेत्र को उठाना

पड़ता था। चौथ कुल अनुमानित राजस्व का चतुर्थांश होता था जो शत्रु क्षेत्र से वसूल किया जाता था। इसकी वसूली के लिए बल प्रयोग भी करना पड़ता था। चौथ के समान सरदेशमुखी भी एक–प्रकार का कर था जो कुल राजस्व का 10 प्रतिशत वसूल किया जाता था।

शिवाजी ने जिन राज्यों को अपने राज्य में नहीं मिलाया था, उनसे वह चौथ तथा सरदेशमुखी वसूल करते थे।

भूमि कर से अधिक धन प्राप्त नहीं होता था। अतः उनसे चौथ वसूल करते थे। शिवाजी अपने को महाराष्ट्र का सरदेशमुख मानते थे अतः वे किसानों से उपज का दसवां भाग लेते थे जो सम्पूर्ण राज्य से वसूल किया जाता था। महाराष्ट्र में वर्षा की कमी तथा ऊबड़–खाबड़ क्षेत्रों के कारण कृषि की स्थिति ठीक नहीं थी इसलिए जीविकोपार्जन के लिए मराठों को लूट–पाट करना पड़ता था। मराठे सैनिकों की भर्ति एवं खर्च हेतु शिवाजी ने चौथ और सरदेशमुखी व्यवस्था लागू की थी।

चौथ पर विस्तार से लिखने पर 2 अंक सरदेशमुखी पर 2 अंक कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उतर 12. भारत में पुर्तगालियों के पतन के चार कारण :–

(1) अलबुकर्क के निर्बल उत्तराधिकारी :– अल्बुकर्क के समान उसके उत्तराधिकारी योग्य तथ प्रतिभावान नहीं थे। वे अत्यंत स्वार्थी तथा निर्बल थे। अपनी आयोग्यता तथा निर्बलता के कारण वे तत्कालीन जटिल समस्याओं का सामना नहीं कर सके। परिणाम स्वरूप पुर्तगाल साम्राज्य का पतन होना अनिवार्य हो गया।

(2) धार्मिक असहिष्णुता की नीति :– पुर्तगालियों ने भारत में धार्मिक कट्टरता की नीति का पालन किया। हिन्दू और मुसलमान दोनों को ईसाई बनाने का प्रयास किया। धार्मिक असहिष्णुता की एवं कट्टरता की नीति से हिन्दू और मुसलमान दोनों का अपना विरोधी बना लिया।

(3) ब्राजील की खोज – दक्षिण अमेरिका में ब्राजील की खोजकर ली तो पुर्तगालियों ने अपना ध्यान उसे बसाने में लगा दिया।

(4) निर्बल–सामुद्रिक शक्ति – इस काल में इग्लैंड तथा फ्रांस की सामुद्रिक शक्ति का अपूर्ण विकास हो गया था, परंतु पुर्तगालियों की सामुद्रिक शक्ति अत्यंत दुर्बल थी अतः उन्हें अंत में पतन का मुंह देखना पड़ा था। और भारत में धीरे–धीरे पुर्तगालियों का अंत हो गया।

4 अंक

उपरोक्तानुसार 4 कारणों को विस्तार देने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे। बिन्दु के नाम लिखने पर 1 अंक प्राप्त होगा।

अथवा

भारत में डचों के पतन के चार कारण निम्नलिखित थे :–

हालैण्डवासी डच के नाम से जाते हैं। डचों का समुद्री यात्रा व व्यापार करना सरल था। साथ ही वे श्रेष्ठ नाविक थे। सन् 1602 में भारत में डचों द्वारा 'ईस्ट इंडिया कम्पनी' की स्थापना की गई जिसे एक घोषणा–पर में व्यापार के साथ युद्ध समझौता और क्षेत्र के विस्तार करने की अनुमति दी गई थी। उचोंने कभी भी भारत में एकाधिकार की बात नहीं सोची। उनके पतन में (1) डच कम्पनी एक राष्ट्रीय कम्पनी थी जिसमें कुशल नेतृत्व का अभाव था (2) हालैण्ड काफी समय से गुलाम था फलतः उसके पास पर्याप्त व्यापारिक सांधन नहीं थे (3) उचों की आन्तरिक आर्थिक स्थिति खराब थी (4) कालांतर में डचों को भारतीयों के प्रति अरुचि की भावना भी पतन का कारण थी (5) अंग्रेजों से युद्ध की वजह से डचों की आर्थिक स्थिति खराब थी। इसके साथ अन्य कारणों में आन्तरिक अव्यवस्था तथा उनके पास साधनों का अभाव के साथ उनकी रुचि इण्डोनेशिया के जावा, सुमात्रा वोर्निर्या द्वीपों में अधिकार करने की अधिक थी क्योंकि इन क्षेत्रों में मसाले की खेती बड़े पैमाने पर की जाती थी।

उपरोक्तानुसार विस्तार से लिखने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे

उत्तर 13. प्राचीन भारतीय –इतिहास की जानकारी के लिए सिक्कों का महत्व : प्रमाणिक जानकारी कराने में सिक्कों का विशेष महत्व है। वे ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है :–

(1) आर्थिक दशा का ज्ञान :– यदि सिक्के शुद्ध सोने या चांदी के होते हैं तो उनसे राज्य की सम्पन्नता का बोध होता है। यदि वे मिश्रित धातु के होते हैं तो राज्य की विपन्नता का बोध होता है।

(2) तिथिक्रम का निर्धारण :– सिक्कों पर अंकित तिथि से उन सिक्कों को चलाने बाले शासक की तिथि का ज्ञान होता है।

(3) साम्राज्य की सीमाओं का निर्धारण :– सिक्कों के प्राप्त होने से स्थानों के आधार पर इतिहासकारों को शासकों के साम्राज्य की सीमाओं का निर्धारण करना सरल हो जाता है।

(4) धार्मिक दशा का ज्ञान – सिक्कों पर अंकित विभिन्न देवी–देवताओं के चित्रों से तत्कालीन धार्मिक दशा का ज्ञान होता है।

(5) सम्राटों की व्यक्तिगत रुचियों का ज्ञान – सिक्कों पर अंकित चित्रों में सम्राटों की व्यक्तिगत रुचियों का भी ज्ञान होता है। उदाहरण के लिए समुन्द्र गुप्त के सिक्कों में उसे बीणा बजाते हुए दिखाया गया है। अतः इससे ज्ञात होता है कि वह संगीत का प्रेमी थी। इसके अतिरिक्त विदेशों से संबंध का ज्ञान तथा सिक्कों पर उत्कीर्ण मूर्तियां चित्रों तथा वाद्य–संगीत से तत्कालीन कला तथा संगीत के विकास का ज्ञान होता है।

5 अंक

उपरोक्तानुसार एवं अन्य कोई 5 बिन्दुओ को विस्तार से लिखने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे। 1+1+1+1+1=5

अथवा

कृषि एवं पशुपालन से नवपाषाण कालीन मानव जीवन में परिवर्तन :–

नव पाषाण काल की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इस युग के मानव द्वारा कृषि का प्रारंभ करना था। इससे पूर्व के मानव को कृषि का ज्ञान नहीं था उस प्राचीन युग में यह कार्य एक महान क्रांति कहा जा सकता है क्योंकि कृषि के प्रारंभ के साथ ही मानव ने नदियों के किनारे रहना प्रारंभ कर दिया और उसने वहां रहने के लिए लट्ठे घास–फूंस और मिट्टी की सहायता से झोपड़ियों (घरों) को निर्माण प्रारंभ कर दिया था। इस काल के मानव ने कृषि के साथ–साथ पशुपालन भी शुरु कर दिया। कृषि व पशुपालन ने मिट्टी के बर्तन बनाने के लिए मानव को प्रोत्साहित किया और यह बर्तन बनाकर अनाज को भी सुरक्षित रखने लगा।

कृषि के विकास के साथ ही साथ मानव ने कपास की खेती कर वस्त्र–निर्माण कला का भी ज्ञान प्राप्त कर लिया था। कृषि के आविष्कार ने मनुष्य को स्थायी– जीवन प्रदान किया। कृषि का आविष्कार एक महान् क्रांति कहा जा सकता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि कृषि की खोज मानव सभ्यता के विकास में एक महत्वपूर्ण घटना थी।

उपरोक्तानुसार विस्तार से लिखने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 14. इल्तुतमिश भारत में मुस्लिम साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक :– भारत में मुस्लिम–साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक इल्तुतमिश को लेनपूल, डॉ. ईश्वरीय प्रसाद एवं डॉ. आर.सी. मजूमदार मानते है :– उनका मत है –

(1) आठवीं सदी में अरबों के आक्रमण व उनकी नाम–मात्र की सत्ता –इल्तुतमिश के पूर्व इस्लाम के अनुयायियों के सैनिक अभियान और आक्रमण भारत पर होने लगे थे। किन्तु भारत में स्थायी साम्राज्य निर्माण नहीं किया।

(2) महमूद– गजनवी के आक्रमण व इस्लामी सत्ता – अरबों के बाद महमूद गजनवी ने केवल मंदिरों तथा रत्नराशि को लूटने का कार्य किया। लूटपाट करके वह वापस गजनी लौट गया। उसने भी यहां स्थायी सत्ता स्थापित नहीं की।

(3) इल्तुतमिश मुस्लिम साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक– (अ) उसने अपनी प्रतिभा, वीरता और साहस तथा सैनिक गुणों से प्रबल शक्तिशाली, कुबाचा, यल्दौज और अन्य सशक्त सामन्तों को परास्त कर दिया। (ब) उसने हिन्दुओं और राजपूत राजाओं की बढ़ती शक्ति को उसने अंत कर दिया। (स) उसने प्रशासकीय सुधार करके साम्राज्य में आंतरिक शांति और सुव्यवस्था बनाए रखने के प्रयास किए। (द) उसने निरंकुश मुस्लिम राजतंत्र की स्थापना की। (इ) उसने अपनी दृढ़ कूटनीति और दूरदर्शिता से भारत के मुस्लिम साम्राज्य को गजनी से पृथक करके उसके स्वतंत्र स्थायी अस्तित्व को प्रतिष्ठि किया।

इस प्रकार सल्तनत को अपने कार्यों से स्थायी तथा सुदृढ़ बनाया अतः इल्तुतमिश भारत में मुस्लिम साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक था।

5 अंक

उपरोक्तानुसार विस्तार से लिखने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे। 2+3=5

अथवा

मध्यकाल में भक्ति आंदोलन की प्रमुखविशेषताएं :–

(1) एकेश्वर बाद में आस्था :– भक्ति आंदोलन के सन्त अनेक देवी–देवताओं की उपासना करने के बजाय एक ईश्वर में विश्वास करते थे।

(2) जाति प्रथा का विरोध :– भक्ति आंदोलन के सन्त मनुष्य मात्र को एक मानते थे। जाति–प्रथा में आस्था नही रखते थे।

(3) आडम्बरों की उपेक्षा तथा सच्ची भक्ति पर बल :– भक्ति अंदोलन का स्वरूप अत्यंत सरल तथा आडम्बर हीन था। अंधविश्वास तथा कर्म काण्डों का

स्थान नहीं था। उन्होंने कहा था कि भगवान का वास हृदय में है, न कि मंदिर और तीर्थ स्थानों में।

(4) मूर्ति पूजा का विरोध :– भक्त संतों ने मूर्ति पूजा में विशेष रूचि नहीं दिखायी और कुछ संतों ने तो स्पष्ट विरोध किया जिनमें कबीर प्रमुख है।

(5) हिन्दू मुस्लिम एकता पर बल :– भक्ति युग के सन्तों ने हिन्दू–मुस्लिम एकता पर विशेष बल दिया। कबीर ने हिन्दू और मुसलमानों की धार्मिक कट्टरता को समाप्त करने के लिए दोनों की आलोचना की। दीर्घकाल तक हिन्दू और मुसलमान परस्पर निकट रहे जिससे उन्हें एक–दूसरे की भलाईयों और बुराईयों को समझने का अवसर भी मिला वे शांतिपूर्वक प्रेम के साथ एक–दूसरे के साथ रहें।

उपरोक्तानुसार एवं अन्य बिन्दुओं को विस्तार से लिखने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे। 1+1+1+1+1=5

उत्तर 15. अकबर की धार्मिक नीति के परिणाम :–

अकबर की धार्मिक नीति के परिणाम दूरगामी सिद्ध हुए :–

(1) अकबर की धार्मिक नीति से राजपूत अत्यंत प्रभावित हुए। उन्होंने अकबर के साथ मैत्रीपूर्ण एवं वैवाहिक संबंध स्थापपित किए। इसके अतिरिक्त राजपूतों ने अकबर के साम्राज्य का विस्तार किया और उसको मजबूत बनाया।

(2) अकबर की धार्मिक नीति के परिणाम स्वरूप अकबर के साम्राज्य की बहुसंख्यक गैर–मुस्लिम जनता ने अकबर के साथ सहयोगात्मक दृष्टिकोण को अपनाया जिससे अकबर को राष्ट्रीय एकता स्थापित करने में सहायता प्राप्त हुई।

(3) अकबर की धार्मिक नीति के परिणाम स्वरूप हिन्दू और मुसलमानों के बीच चली आ रही शत्रुता में कमी आई।

(4) अकबर की धार्मिक नीति के परिणाम स्वरूप कला, साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में हिन्दू मुस्लिम एकता का सूत्रपात हुआ।

(5) अकबर ने अपने आचरण व व्यवहार में अत्यधिक उदारता व समन्वय को भी महत्व दिया उसने हिन्दू –पोशाक पहनना तथा तिलक लगाना भी आरंभ कर दिया था जिसके फलस्वरूप धर्म निरपेक्ष नीति का अवलंवन कर अपने साम्राज्य में धार्मिक एकता की स्थापना हुई। उसने हिन्दुओं के अनेक धार्मिक ग्रंथों का अनुवाद फारसी में करवाया। इस प्रकार समनव्यकारी प्रवृति अपनाई।

अकबर ने विभिन्न धर्मों की धाराएं परस्पर मिलकर बहाने का प्रयास किया और अधिकांश जनता का स्नेह पात्र बन गया।

5 अंक

उपरोक्तानुसार एवं अन्य कोई 5 बिन्दुओं पर विस्तार से लिखने पर 5 अंक प्राप्त होंगे। 1+1+1+1+1=5

अथवा

शाहजहां कालीन स्थापत्य कला का परिचय :–

(1) आगरा के किले में बनीं इमारतें – (अ) दीवान ए आम को शाहजहां ने 1628 ई. में बनवाया था। यह 201 फीट लम्बा और 64 फीट चौड़ा है।

(ब) दीवान–ए–खास यमुना नदी की ओर एक ऊंची उठी हुई छत पर दीवान ए खास बना है। इसमें दो बड़े हाल हैं जो संगमरमर के गलियारे से जुड़े हैं।

(स) मच्छी भवन – दीवान ए आम के पीछे मच्छी भवन का निर्माण करवाया गया।

(द) शीशमहल – दीवान ए खास के समीप ही शीश महल है। खास तथा नगीना मस्जिद का निर्माण हरम की स्त्रियों के लिए कराया गया। मोती मस्जिद का निर्माण आगरे के किले में किया गया। अंगुरी बाग खास महल के सामने था। जामा–मस्जिद का निर्माण शाहजहां ने 1648 ई. में किया था।

(2) दिल्ली का लाल किला (3) जामा मस्जिद दिल्ली – दिल्ली के लाल किले के बाहर चबूतरे पर जामा मस्जिद है। यह मस्जिद अत्यंत भव्य है।

(4) ताजमहल– ताजमहल वास्तुकला की कारीगरी का सर्वोत्कृष्ट नमूना तथा शाहजहां का विश्व का सर्वश्रेष्ठ उपहार है। इसका निर्माण सन् 1631 में किया गया था। ताजमहल आगरा के किले से एक मील की दूरी पर यमुना–नदी के किनारे स्थित है। यह संसार के आश्चर्यो में गिना जाता है।

उपरोक्तानुसार कोई पांच इमारतों का वर्णन करने कुल 5 अंक प्राप्त होंग।

उत्तर 16. शिवाजी का चरित्र एवं उपलब्धियों का मूल्यांकन :–

शिवाजी को एक महान् विजेता कुशल प्रशासक, प्रजाावत्सल तथा एक राष्ट्र निर्माता माना जाता है।

(1) आदर्श तथा उच्च चरित्र :– शिवाजी का व्यक्तित्व बहुमुखी तथा उच्चकोटि का था वे देशभक्त, धर्मात्मा, राष्ट्र निर्माता तथा एक कुशल प्रशासक थे। शिवाजी के व्यक्तित्व आदर्श प्रजा पालक के थे।

(2) उज्जवल चरित्र :– वे प्रजा की बहू–बेटियों को ही नहीं वरन् शत्रु की बहू–बेटियों को अपनी बेटियां मानते थे।

(3) महान् संगठन कर्ता :–शिवाजी एक महान संगठनकर्ता थे। उन्होंने मराठा जाति को संगठित करके उसे एक सैनिक जाति के रूप में परिणित कर दिया।

(4) महान सेना नायक :– शिवाजी एक महान् तथा कुशल सेनानायक थे। वे स्वयं युद्ध का संचालन बड़ी कुशलता से करते थे।

(5) महान् विजेता :– शिवाजी एक महान् सेना नायक होने के साथ–साथ एक महान् विजेता भी थे। सन 1656 ईस्वी में शिवाजी ने जावली पर आक्रमण कर अधिकार कर लिया। सन् 1674 में राज्याभिषेक के पश्चात् शिवाजी पेड़ गांव, भूताल, छावनी काली तथा कोल्हापुर पर जीत दर्ज की।

(6) कुशल प्रशासक :– वह केवल एक साहसी तथा सफल सैनिक विजेता ही नहीं वरन् अपनी प्रजा के बुद्धिमान शासक भी थे। शिवाजी जनता की सेवा को

ही अपना धर्म समझते थे। शिवाजी ने जमींदारी जागीरदारी तथा ठेकेदारी प्रथा की पूर्णतयाः समाप्त कर दिया था।

5 अंक

उपरोक्तानुसार एवं अन्य कोई 5 बिन्दुओं पर विस्तार से लिखे जाने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे। 1+1+1+1+1=5

अथवा

मराठा राज्य की स्थापना तथा विस्तार हेतु शिवाजी के प्रयास :–

(1) जावली पर अधिकार :– शिवाजी ने 1656 ईस्वी में जावली पर आक्रमण कर उस पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। इस विजय से शिवाजी के साधनों और शक्ति में अपार वृद्धि हुई।

(2) कोंकण विजय – 1657 में शिवाजी ने कोंकण पर आक्रमण कर किलों पर अधिकार कर लिया।

(3) मावल प्रदेश का संगठन किया।

(4) बीजापुर (अफजल खां) से संघर्ष कर उसकी हत्या कर दी तथा सेना को मार भगाया।

(5) जय सिंह से संघर्ष (पुरंदर की संधि) मजबूर होकर शिवाजी ने जयसिंह से पुरंदर की संधि की।

(6) मुगलों से संघर्ष कर शाइस्ता खां को घायल कर दिया उसका पुत्र संघर्ष में मारा गया।

(7) शिवाजी के दीर्घकाल तक संघर्ष करने के पश्चात अपने पिता से छोटी सी जागीर को एक शक्तिशाली विशाल साम्राज्य का रूप देने के पश्चात् 6 जून 1674 ई. में रायगढ़ को अपनी राजधानी बनाया। ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो हमें ज्ञात होगा कि जिस समय शिवाजी का उदय हुआ उस समय हिंदू राष्ट्र पतन की अवस्था में था। उत्तरी भारत में राजपूतों का गौरव समाप्त हो गया

था। वे हिंदुओं को धार्मिक स्वतंत्रता दिलाना चाहते थे। परंतु वे यह नहीं जानते थे कि जब तक राजनीतिक सत्ता हाथ में नहीं आएगी तब तक धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं हो। अतः शिवाजी ने राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने के लिए मुगलों से निरंतर संघर्ष किया। इसी कारण वे मराठों को भी एकता के सूत्र में बांधकर औरंगजेब के विरुद्ध संघर्ष की प्रेरणा देते रहे और मराठाा राज्य की स्थापना की।

उपरोक्तानुसार बिन्दुओं सहित विस्तार से लिखने पर कुल 5 अंक प्राप्त हों।
1+4=5

उत्तर 17. सन् 1773 ईस्वी के रेग्यूलेंटिंग एक्ट की प्रमुख धाराएं :–

रेग्यूलेंटिग एक्ट (1773 ई.) की प्रमुख धाराएं निम्नलिखित थीं

(1) बंगाल के गर्वनर को भारत का गवर्नर जनरल बनाया गया मद्रास व बम्बई के गवर्नर उसके अधीन कर दिए गए।

(2) गवर्नर जनरल की सहायता के लिए चार सदस्यों की एक परिषद की नियुक्ति की गई जिसमें निर्णय बहुमत से होता था।

(3) कलकत्ता में एक उच्चत्तम न्यायालय की स्थापना की गयी। इसमें एक मुख्य न्यायाधीश और तीन अन्य न्यायाधीशों को नियुक्त करने की व्यवस्था की गई थी।

(4) कम्पनी के प्रोपराइटरों की मत देने की योग्यता में वृद्धि कर दी गई। अब वही व्यक्ति मताधिकार में भाग ले सकते हैं जिनके पास कम से कम एक हजार पौंड शेयर्स रहती थी।

(5) डायरेक्टरों का निर्वाचन अब एक वर्ष के स्थान पर चार वर्षों के लिए किया गया । इनमें से एक चौथाई सदस्य प्रत्येक वर्ष त्यागपत्र देंगे और एक वर्ष तक सदस्य नहीं चुने जाएंगे। (6) कम्पनी के डायरेक्टरों को कम्पनी की धन संबंधी रिपोर्ट इंग्लैंड के अर्थ मंत्री को तथा सैनिक व राजनैतिक कार्यों की रिपोर्ट इंग्लैण्ड के विदेश मंत्री को देनी होगी।

रेग्युलेंटिंग एक्ट इंग्लैंड की सरकार का कम्पनी के मामलों को नियमित करने तथा भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था में सुधार करने का पहला प्रयास था। यह एक्ट इग्लैंड की संसद का कम्पनी के शासन में प्रथम हस्तक्षेप था।

5 अंक

उपरोक्तानुसार धाराओं का विस्तार से वर्णन किये जाने कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

महालबाड़ी – बंदोबस्त :– लगान की नई व्यवस्था, महालवारी बंदोबस्त नामक लगान की नई व्यवस्था मार्टिन वर्ड की देखरेख में भारत में प्रारंभ हुई। मार्टिन वर्ड उत्तरी भारत में भूमिकर व्यवस्था के प्रवर्तक के नाम से जाने जाते हैं। इस व्यवस्था के अंतर्गत सरकार समस्त गांव से समझौता करती थी। समस्त गांव सामूहिक रूप से और गांव का प्रत्येक किसान व्यक्तिगत रूप से लगान देने के लिए उत्तरदायी होता था। गांव के प्रमुख या नम्बरदार को सारे गांव की ओर से हस्ताक्षर करने होते थे। लगान की जो राशि समस्त गांव को देनी होती थी प्रत्येक किसान अपने–अपने खेत के हिसाब से अपने भाग की अदायगी करता था।

इस व्यवस्था का सबसे बड़ा दोष यह था कि इस व्यवस्था में गांव के प्रमुख या नम्बरदार के जो गांव की ओर से समझौते पर हस्ताक्षर करता था, विशेष अधिकार प्राप्त हो गए थे।

यह प्रमुख या नम्बरदार किसानों का शोषण करते थे। इन्होंने किसानों से ऊंची दरों पर लगान वसूल किया, इससे किसानों की दशा दयनीय हो गयी। सरकार भी महालबारी बंदोबस्त के तहत लगान के संबंध में अपना संपर्क सीधे ग्राम प्रमुख या नम्बरदार से रखती थी। किसानों के पास अत्याचार और शोषण से बचने के लिए कोई उपाय नहीं था।

उपरोक्तानुसार विस्तार से वर्णन करने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 18. स्वामी विवेकानंद का राष्ट्रीय जागरण में योगदान :

(1) स्वामी विवेकानंद ने हिन्दुओं को अपने धर्म की श्रेष्ठता का ज्ञान कराया तथा उन्हें धर्म के वास्तविक रूप का भी परिचय दिया। वे धर्म के माध्यम से भारतवसियों में अपने राष्ट्र के प्रति जागृति उत्पन्न करना चाहते थे।

(2) स्वामी विवेकानंद ने हिंदूधर्म की श्रेष्ठता को सिद्ध करने के साथ–साथ सभी धर्मों की एकता पर बल देकर भारतीयों में राष्ट्रीय एकता उत्पन्न करने का प्रयास किया।

(3) विवेकानंद ने धर्म तथ आध्यात्म के आधार पर भारतवासियों को राष्ट्रीयता का पाठ पढ़ाया।

(4) विवेकानंद ने गरीबों की सेवा और उत्थान के कार्यक्रम को पुनः आरंभ कर वस्तुतः प्रत्येक भारतीय को राष्ट्र की सेवा के लिए प्रेरित किया। देश की महानता तथा भारतीयों की एकता को प्रदर्शित कर साधारण जनता की गरीबी और अज्ञान को दूर करने के लिए प्रेरित कर तथा प्रत्येक भारतीय को सबल बनने की सलाह देकर विवेकानंद ने उनमें राष्ट्रीयता की भावना को जागृत किया।

(5) विवकानंद ने भारतीयों को संबोधित करते हुए निर्देश दिया था कि – 'हे बीर, निर्भीक बनो, साहस धारण करो और गर्व के साथ घोषणा करो कि मैं भारतीय हूँ व प्रत्येक भारतीय मेरा भाई है।' विवेकानंद के इस प्रकार के ओजस्वी सम्बोधन ने भारतीयों में राष्ट्र–प्रेम की भावना उत्पन्न की थी।

5 अंक

उपरोक्तानुसार अथवा अन्य 5 बिन्दुओं को विस्तार से लिखने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे। 1+1+1+1+1=5

अथवा

सन् 1857 की क्रांति की असफलता के पांच कारण :–

(1) समय के पूर्व प्रारंभ :– क्रांति के लिए 31 मई सन् 1857 की तिथि निर्धारित की गई थी। क्रांति निर्धारित तिथि से पूर्व आरंभ हो गयी थी। क्रांति की चर्बी वाले कारतूसों के प्रयोग की समस्या के कारण 10 मई को ही सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। यदि निर्धारित तिथि को ही क्रांति आरंभ होती तो संपूर्ण भारत में इसका एक साथ विस्फोट होता जिससे अंग्रेजों को पराजय का मुख देखना पड़ता।

(2) आधुनिक अस्त्र–शस्त्रों का अभाव :– 1857 की विफलता का प्रमुख कारण क्रांतिकारियों के पास पुराने ढंग से अस्त्र–शस्त्रों का होना था जबकि अंग्रेजों के पास नवीन ढंग की रायफलें तथा तोपें थी जिनकी मार दूर–दूर तक होती थी।

(3) डाक तार विभाग पर अंग्रेजों का नियंत्रण :– भारत की डाक तार व्यवस्था पर अंग्रेजों का ही नियंत्रण था। अतः वे सरलता तथा शीघ्रता से एक स्थान से दूसरे स्थान पर सूचनाएं भेजकर आवश्यक संदेश तथा स्थिति का ज्ञान प्राप्त कर लेते थे। उन्हें क्रांतिकारियों की गतिविधियों की सूचना भी डाक तार द्वारा शीघ्र प्राप्त हो जाती थी। क्रांतिकारियों के पास इस प्रकार के कोई साधन नहीं थे।

(4) कुशल नेतृत्व का अभाव :– वास्तव में कोई भी क्रांतिकारी ऐसा नहीं निकला जो देश के विभिन्न वर्गों के एक झंडे के नीचे इकट्ठा कर सके।

(5) नेपालियों तथा सिक्खों द्वरा अंग्रेजों को सहयोग देना :– नेपाल के गोरखों तथा पंजाब के सिक्खों ने क्रांतिकारियों के सहयोग देने के बजाय क्रांति का दमन करने में अंग्रेजों का साथ दिया। पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त भारतीय 1857 की क्रांति से पृथक हो गए थे। शिक्षित वर्ग का क्रांति से पृथक रहना भी उसकी असफलता का कारण बना।

उपरोक्तानुसार अथवा किन्हीं 5 बिन्दुओं को विस्तार से लिखने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे। 1+1+1+1+1=5

उत्तर 19. मध्यप्रदेश में विकसित पाषाण युगीन सभ्यता :–

ऐतिहासिक विश्लेषण के आधार पर पाषाण काल को तीन भागों में बांटा गया है।

(1) मध्यप्रदेश में पुरा पाषाण काल – चम्बल, नर्मदा तथा सोनार अग्नि, कुंडाला वाध, बैनगंगा पार्वती आदि घाटियों में पाषण कालीन अवशेष प्राप्त हुए हैं। उत्खनन एवं खोजों से ज्ञात होता है कि आदिम प्रजातियां नदियों के किनारे कन्दराओं में निवास करती थी। इनकी आजीविका का प्रमुख साधन शिकार था। ये आदिम जतियाँ शिकार के लिए पत्थरों के औजार और हथियारों का प्रयोग करती थी। इस काल के औजार बिना हैंडिल के होते थे। इसक काल का मुख्य औजार हस्तकुठार है। औजार भद्दे, बेडौल व अन्यव स्थित थे।

(2) मध्यप्रदेश के मध्य पाषाणकाल :– मध्यपाषाण कालीन अवशेष मंदसौर, सीधी, सागर, उज्जैन, नरसिंहगढ़ आदि से प्राप्त हुए हैं। इस काल के मानव ने एक दो इंच तक के छोटे औजारों भी निर्मित किए जिसमें लकड़ी के हैंडिल भी मिलते है। छोटे औजारों को लघु–अश्म कहा जाता है। इस काल में मानव कन्दराओं में व छोटी–छोटी पहाड़ियों पर रहता था। पशुओं तथा मछलियों का मांस भूनकर खाने लगा था इसके अतिरिक्त कंद–मूल फल और अन्य वनस्पतियां भी खाता था।

(3) मध्यप्रदेश में नव पाषाण काल :– मध्यप्रदेश में नव पाषाण कालीन औजार जबलपुर एरण, कुण्डम, जतकारा, दमोह, होशंगाबाद आदि स्थानों से प्राप्त हुए हैं। इस काल में पत्थरों के चिकने नुकीले, सुड़ौले, चमकदार तथा पालिशदार औजार बनाने लगा था। सबसे बड़ी विशेषता में औजार केवल आखेट के लिए निर्मित नहीं किए गये थे। वरन् दैनिक कार्यों के लिए उपयोग होते थे। मनुष्य कृषि करने लगा था। इस काल में मानव ने पशुपालन करना सीख लिया था मनुष्य ने पशुओं के बालों तथा पौधों के रेशे से वस्त्र बनना सीख लिया था। मानव ने मिट्टी के बर्तन बनाने की हाथ से कला सीख ली थी।

5 अंक

उपरोक्तानुसार एवं अन्य बिन्दुओं पर विस्तार से लिखे जाने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

मध्यप्रदेश का 1857 की क्रांति में योगदान :–

मध्यप्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम की प्रमुख गतिविधियां 1857 की क्रांति से ही प्रारंभ होती है। 1857 की क्रांति का प्रारंभ मध्यप्रदेश में महाकौशल क्षेत्र से उस समय हुआ जबकि एक भारतीय सैनिक ने अंग्रेजी सेना के एक अधिकारी पर प्राण घातक हमला किया था।

इसके पश्चात इस क्रांति का प्रारंभ ग्वालियर, इन्दौर , भोपाल, सागर, जबलपुर, होशंगाबाद आदि में भी हुआ। मध्यप्रदेश में 1857 की क्रांति में प्रमुख योगदान देने वाले क्रांतिकारी थी– तात्या टोपे, महारानी लक्ष्मीबई, अवन्ती बाई, राणा बख्ताबर सिंह, शहीद नारायण सिंह तथा ठाकुर रणपाल सिंह आदि।

1857 के प्रमुख क्रांतिकारी में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई तथा तात्या टोपे के नाम विशेष उल्लेखनीय है। रानी लक्ष्मीबाई ने देशभक्त विद्रोही सेनिकों का नेतृत्व करते हुए ब्रिटिश सैनिकों को भयभीत कर दिया।

झांसी के हाथ से निकल जाने पर लक्ष्मीबाई अपने साथी तात्या टोपे की सहायता से ग्वालियर पर अधिकार करने में सफल हुई। उन्होंन बड़े उत्साह से ग्वालियर की जनता को जागृत किया। ब्रिटिश सेना ने उनके किले को घेर लिया। वे बड़े ही उत्साह से अपनी सेना का संचालन करती हुई युद्ध क्षेत्र में उतर पड़ी परंतु ब्रिटिश सेना के आघात से वे घायल हुई तथा उनके स्वर्गवास हो गया। उनके सामने ही तात्या टोपे ने मध्यप्रदेश के अनेक क्षेत्रों में सफलतापूर्वक ब्रिटिश सेनाओं से युद्ध किया परंतु एक विश्वासघाती षड़यंत्र के कारण अंग्रेजों ने उसे बंदी बनाकर फांसी पर चढ़ दिया था। यद्यपि 1857 की

क्रांति असफल हो गयी थी परंतु यह सत्य है कि मध्यप्रदेश में इस क्रांति की व्यापकता ने यहां की राष्ट्रीयता की भावना को उच्च स्तर पर पहुंचा दिया था।

उपरोक्तानुसार एवं अन्य 5 बिन्दुओं को विस्तार से लिखने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 20. बक्सर के युद्ध के कारण :– (1) मीरकासिम कम्पनी के कर्मचारियों के निजी व्यापार का विरोध करता था अतः उसे अंग्रेजों ने नवाब के पद से हटा दिया।

(2) मीर कासिम ने अंग्रेजों के प्रभाव से दूर रहने के लिए अपनी राजधानी मुर्शिदावाद से हटाकर मुंगेर में स्थापित की।

(3) मीर कासिम ने अनेक अंग्रेज बंदियों की हत्या भी कर दी थी। इस हत्याकांड ने अंग्रेजों को उत्तेजित कर दिया।

मीर कासिम शुजाउद्दौला और शाह आलम की सम्मिलित सेना ने अंग्रेजों से लोहा लेने के लिए बिहार की ओर बढ़ना प्रारंभ किया। मुनरों को कम्पनी का नया सेनापति बनाया गया। 22 अक्टूबर 1764 को गंगा नदी के तट पर स्थित बक्सर नामक स्थान पर सामना किया। घमासान युद्ध हुआ। दोनों पक्षों के मध्य बक्सर के मैदान में घमासान युद्ध हुआ। मीर कासिम युद्ध क्षेत्र से भाग गया और मुगल–सम्राट शाह आलम अंग्रेजों से जा मिला लेकिन अवध के नवाब शुजाउद्दोला ने अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष जारी रखा परंतु वह अकेले कुछ न कर सका। अंग्रेजी सेना अवध की ओर बढ़ी और उन्होंने बनारस तथा इलहाबाद पर भी अधिकार कर लिया अंत में 1765 में अवध के नवाब शुजाउद्दौला ने आत्म समर्पण कर दिया यह युद्ध निर्णायक सिद्ध हुआ।

महत्व :– बक्सर के युद्ध का राजनीतिक दृष्टि से विशेष महत्व है। प्लासी के युद्ध ने यदि अंग्रेजों को भारत में पैर जमाने का अवसर दिया तो बक्सर के युद्ध ने उन्हें अपनी गौरवपूर्ण प्रतिष्ठा को विकसित करने का अवसर दिया। प्लासी की सफलता ने तो केवल बंगाल में ही अंग्रेजों का प्रभुत्व स्थापित किया था,

परंतु बक्सर के युद्ध के कारण अंग्रेज उत्तरी भारत की भी एक महत्वपूर्ण शक्ति बन गये थे।

शक्तिशाली अवध प्रांत भी कम्पनी के नियंत्रण में आ गया जिसके फलस्वरूप कम्पनी को पश्चिम की ओर अपने प्रसार का अवसर मिला। प्लासी की लड़ाई की अपेक्षा बक्सर की लड़ाई के फल अधिक निर्णायक थे। प्लासी के युद्ध ने अंग्रेजों की प्रतिष्ठा को बढ़ाया परंतु बक्सर ने इससे अधिक कुछ किया। यदि प्लासी में बंगाल के नवाब की हार हुई तो बक्सर के युद्ध ने अवध और मुगल सम्राट की शक्ति की पराजय की घोषणा की। प्लासी के युद्ध ने यदि अंग्रेजों को भारत में पैर जमाने का अवसर दिया तो बक्सर केयुद्ध ने उन्हें अपनी गौरवपूर्ण प्रतिष्ठा को विकसित करने का अवसर दिया।

बक्सर के युद्ध में अंग्रेजों को ऐसी अप्रत्याशित विजय हासिल हुई कि जिसकी कल्पना उन्हें स्वप्न में भी नहीं थी। इसके फलस्वरूप भारत में ब्रिटिश शासन की नींव बहुत मजबूत हो गई थी।

6 अंक

उपरोक्तानुसार कारण लिखने पर 3 अंक महत्व पर 3 अंक कुल 6 अंक प्राप्त होंगे। 3+3=6

अथवा

आधुनिक भारतीय इतिहास जानने के स्त्रोत निम्नांकित है :–

(1) कम्पनी के दस्तावेज एवं अभिलेखीय सामग्री :– कम्पनी दस्तावेजों और अभिलेखीय सामग्री से आधुनिक काल की राजनीति सामाजिक तथा आर्थिक एवं धार्मिक स्थितियों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त होती है। कम्पनी के दस्तावेजों, तत्कालीन भारत में वायसरायों और भारत सचिवों के अधिकांश निजी कागजाद माइक्रो फिल्मों के रूप में 'राष्ट्रीय' अभिलेखगार, नई दिल्ली और नेहरु मेमोरियल म्यूजियम एण्ड लाइब्रेरी, नई दिल्ली के पास सुरक्षित है।

(2) सुरक्षित दस्तावेज :– इसके अतिरिक्त 19वीं व बीसवीं शताब्दी के महत्वपूर्ण दस्तावेज इडिया ऑफिस लाइब्रेरी लंदन और ब्रिटिश म्यूजियम लंदन में सुरक्षित हैं।

(3) निजी दस्तावेज, जीवनी साहित्य और संस्मरण :– निजी दस्तावेजों के अंतर्गत, भारतीय राजनीतिज्ञों एवं देशी–रियासतों के निजी–दस्तावेज, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की निजी पत्रावलियां और नेहरु मेमोरियल म्यूजियम एण्ड लाइब्रेरी नई दिल्ली में उपलब्ध है।

निजी दस्तावजों के अतिरिक्त जीवनी साहित्य तथा संस्मरणों से भी आधुनिक इतिहास लेखन में सहायता प्राप्त होती है। जीवनी साहित्य एवं संस्मरणों में महात्मा गांधी, पंडित जवाहरलाल नेहरु, सुभाषचंद्र बोस, मौलाना अबुल कलाम आजाद और डा. राजेन्द्र प्रसाद के जीवन वृतांतों एवं संस्मरणों से महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

(4) समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं :– आधुनिक काल के इतिहास के जानने में तत्कालीन समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। द इंडियन मिरर, द बंगाली, द अमृत बाजार पत्रिका, द केसरी, द हिन्द, भारत मित्र। इन समाचार पत्र और पत्रिकाओं में आधुनिक भारत के इतिहास लिखने में बहुत सहायता मिलती है।

(5) सरकारी प्रपत्र और काननू :– 1853 ई. तक पारित हेने वाले विभिन्न चार्टर अधिनियम भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी के इतिहास की रचना का महत्वपूर्ण स्त्रोत है।

(6) पुस्तकें :– आधुनिक काल के इतिहास के निर्माण में पुस्तकों से भी महत्वपूर्ण जानाकरी प्राप्त होती है। इतिहास के निर्धारण एवं निर्माण के लिए सामग्री उपलब्ध है जिसकी सहायता से प्रमाणिक एवं निष्पक्ष इतिहास का निर्माण सुगमता से संभव है।

उपरोक्तानुसार एवं अन्य बिन्दुओं को विस्तार से लिखने पर पूर्ण 6 अंक प्राप्त होंगे। 1+1+1+1+1+1=6

उत्तर 21. महात्मा गांधीजी का असहयोग आंदोलन :–

(1) युद्धोत्तर भारत में असंतोष – प्रथम विश्वयुद्ध के समय ब्रिट्रिश सरकार ने यह घोषणा की थी कि भारत में स्वशासन संस्थाओं का विकास किया जायेगा। ब्रिट्रिश प्रधानमंत्री ने यह भी कहा था कि 'यह युद्ध लोकतंत्र की रक्षा के लिए लड़ा जा रहा है। युद्ध समाप्त हो जाने के पश्चात् ब्रिट्रिश सरकार ने अपनी घोषणाओं तथा सिद्धांतों की उपेक्षा की थी।'

(2) सन् 1919 का अधिनियम – इससे द्वैंध शासन प्रणाली की स्थापना की थी। कांग्रेस के नेताओं ने इसको अंग्रेजों की कूटनीति–चाल बताया क्योंकि इसमें साम्प्रदायिक चुनाव प्रणाली द्वारा हिन्दू तथा मुसलमानों में फूट डालने का प्रयास किया गया था।

(3) 1971 की रूसी क्रांति – महात्मा गांधी को कुछ तत्कालीन अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों ने भी प्रभावित किया था। सन् 1917 ई. में रूसी क्रांति हुई जिसने भारतीयों को यह सिखाया कि किस प्रकार जनता शक्तिशाली आंदोलन चलाकर अपने लक्ष्यों ताकि अधिकारों को प्राप्त कर सकती है।

(4) रौलेक्ट एक्ट – इस एक्ट के द्वारा किसी भी व्यक्ति को गिरफ्तार किया जा सकता था तथा कानूनी कार्यवाही किए बिना दीर्घकाल तक नजरबंद रखा सकता था। रोलेक्ट एक्ट का प्रमुख उद्देश राष्ट्रीय आंदोलनों को कुचलना था अतः गांधी जी ने इस एक्ट का व्यापक विरोध किया।

(5) जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड – रोलेक्ट एक्ट का विरोध करने के लिए 13 अप्रेल, 1919 को अमृतसर के जलियांवाला बाग में एक सार्वजनिक सभा हो रही थी। जनरल डायर ने बाग को घेरकर बिना चेतावनी दिए भीड़ पर गोलियों की वर्षा की। इस हत्याकाण्ड में कई लोग मारे गए। महात्मा गांधी पर इस हत्याकांड का गहरा प्रभाव पड़ा और वे बिट्रिश साम्राज्य के शत्रु हो गए।

(6) अकाल व महामारी – सन् 1917 ई. में पर्याप्त वर्षा न होने से देश में व्यापक अकाल पड़ा। सरकार द्वारा कोई विशेष उपाय नहीं किए गए। अकाल

के साथ देश में प्लेग भी फैला। सरकार द्वारा इस दिशा में जन–राहत के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया अतः जनसाधारण में ब्रिट्रिश शासन के प्रति व्यापक असंतोष फैल गया।

(7) खिलाफत आंदोलन – प्रथम विश्व युद्ध के बाद तुर्की का विभाजन किया गया और सुल्तान के समस्त अधिकार छीन लिए गए। इसमें भारतीय मुसलमानों के हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ा और वे ब्रिट्रिश साम्राज्य के विरोधी हो गए।

महात्मा गांधी जी ने इस परिस्थिति का लाभ उठाकर खिलाफत आंदोलन में सक्रियता से भाग लिया। परिणाम स्वरूप खिलाफत आंदोलन के मुस्लिम नेताओं ने भी कांग्रेस का पक्ष लेते हुए महात्मा गांधी जी के असहयोग आंदोलन में निष्ठा से भाग लिया।

5 अंक

उपरोक्तानुसार एवं अन्य 6 बिन्दुओं को विस्तार से लिखने पर पूर्ण 6 अंक प्राप्त होंगे। 1+1+1+1+1+1=6

अथवा

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में सुभाष चन्द्र बोस और आजाद हिन्द फौज का योगदान :–

नेताजी सुभाषचंद्र बोस भारतीय राष्ट्रीय – आंदोलन के सर्वप्रमुख नायकों में से एक माने जाते है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान नेताजी सुभाषचंद्र बोस आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च सेनापति घोषित किए गए। उन्होंने 21 अक्टूबर 1943 ईस्वी को सिंगापुर में स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार का गठन किया।

सुभाषचंद्र बोस ने 'दिल्ली–चलो' का नारा भी लगाया। उनकी इस अस्थायी सरकार को जर्मनी और जापान ने समर्थन दिया।

सुभाषचन्द्र बोस का नारा था 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा।'

6 नवम्बर 1943 ईस्वी को जापानी सेना ने आजाद हिंद फौज को अंडमान और निकोबार द्वीप सौंप दिए। वर्मा–भारत सीमा पार कर सर्वप्रथम बार 1944 में आजाद हिंद फौज ने भारत की स्वतंत्र भूमि पर तिरंगा झण्डा फहराया।

6 जुलाई 1944 ईस्वी में बोस ने 'आजाद हिंद रेडियो प्रसारण' किया। इसमें पहली बार गांधी जी को राष्ट्रपिता शब्द से संबोधित किया।

अंग्रेज सरकार ने आजाद हिंद फौज के सैनिकों जिनमें प्रमुख थे– प्रेम कुमार सहगल, गुरू वक्शसिंह ढिल्लन और शाहनवाज खान आदि पर मुकदमा चलाया गया। देश भर में उनकी रक्षा के लिए आवाज उठी अतः ब्रिट्रिश सरकार को मजबूर हेकर आजाद–हिन्द फौज के सभी सैनिकों को मुक्त करना पड़ा था।

मई 1945 में ब्रिट्रिश सेना द्वारा रंगून पर पुनः अधिकार करने के साथ ही आजाद हिंद फौज के साथ जापानी सेना को आत्मसर्मपण करना पड़ा।

18 अगस्त 1945 ईस्वी को ताइक हवाई अड्डे पर हुई विमान दुर्घटना में सुभाषचंद्र बोस मृत्यु को प्राप्त हुए।

इस तरह सुभाषचन्द्र बोस और आजाद हिंद फौज का भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में अमूल्य योगदान था ।

उपरोक्तानुसार नेताजी के प्रयासों का वर्णन लिखने पर पूर्ण 6 अंक प्राप्त होंगे।

– – – – – – – – –